Total Pages : 3 **Roll No. ----------**

DMA-103

ज्योतिष शास्त्र में विविध व्याधि योग

Diploma in Medical Astrology (DMA)

प्रथम वर्ष, सत्र जून 2022

Time: 2 Hours Max. Marks: 100

नोट : यह प्रश्न पत्र सौ (100) अंकों का है जो दो (02) खण्डों, क तथा ख में विभाजित है। प्रत्येक खण्ड में दिए गए विस्तृत निर्देशों के अनुसार ही प्रश्नों को हल करना है।

खण्ड –क

(दीर्घ उत्तरों वाले प्रश्न)

नोट : खण्ड 'क' में पाँच (05) दीर्घ उत्तरों वाले प्रश्न दिये गये हैं, प्रत्येक प्रश्न के लिए छब्बीस (26) अंक निर्धारित हैं। शिक्षार्थियों को इनमें से केवल दो (02) प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

[2 x 26 = 52]

Q.1. काल की अवधारणा के ऊपर विस्तृत निबंध लिखें।

P.T.O.

Q.2. कालपुरूष का रोगों से क्या संबंध है? विस्तृत रूप में बताएं।

Q.3. ग्रह व नक्षत्रों के स्वरूप का विस्तृत परिचय दें।

Q.4. जन्मजात नेत्र रोग एंव चर्म रोग का ज्योतिषीय योग बताएं।

अथवा

सूर्य–चन्द्र से उत्पन्न रोगों के विषय में विस्तार पूर्वक लिखिए।

Q.5. जन्मजात कर्ण रोगों की ज्योतिषीय चर्चा करें।

खण्ड – ख

लघु उत्तरों वाले प्रश्न

नोट : खण्ड 'ख' में आठ (08) लघु उत्तरों वाले प्रश्न दिये गये हैं, प्रत्येक प्रश्न के लिए बाराह (12) अंक निर्धारित हैं। शिक्षार्थियों को इनमें से केवल चार (04) प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

[4 x 12 = 48]

Q.1. नवविध कालमान का उल्लेख करें।

Q.2. कालपुरूष के शरीर में नक्षत्रों की स्थापना कर उद्देश्य स्पष्ट करें।

Q.3. होरा शास्त्र के अनुसार अंधत्व (आंख फटना) के योग की व्याख्या करें।

Q.4. मुख रोग के योग बताकर जिह्वा रोग की व्याख्या करें।

Q.5. हकलाने एंव तुतुलाने के ज्योतिषीय योग बताएं।

Q.6. नासिका रोग एंव उसके योग की व्याख्या करें।

Q.7. हृदय रोग को संक्षेप में लिखें।

Q.8. ग्रहों की उपासना पद्धति को बताएं।

****